2

मसीह में नए लोग

''सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गईं।'' (2 कुरिन्थियों 5:17)।

नयापन सबको अच्छा लगता है। नया बच्चा हो, नई कार, नया घर या फिर नई जुराबें ही हों, उनमें नयेपन की ताज़गी और सजीवता हमें रोमांचित कर ही देती है।

यूनानी भाषा में दो शब्द हैं जिनका अनुवाद हमारी भाषा में एक शब्द ''नया'' के रूप में किया जाता है। उनमें से एक शब्द *नियोस* (neos) है जिसका अर्थ है ''समय में नया।'' किसी नवजात शिशु के लिए इस शब्द का इस्तेमाल करके, हम कह सकते हैं, ''वह एक नया मानवीय जीव है।'' हाल ही में बने किसी घर के लिए जो पहले नहीं था हम इस शब्द का इस्तेमाल कर सकते हैं, ''यह एक नया मकान है।'' बच्चा तथा मकान वास्तव में ''समय में नये'' हैं। उन्हें अस्तित्व में आए अधिक समय नहीं हुआ है।

एक और यूनानी शब्द, *केनोस* (*kainos*) है जिसका मूल अर्थ है ''नये गुण वाला।'' इस शब्द से, हम किसी पुराने मकान को जिसकी फिर से मरम्मत हुई हो, कह सकते हैं कि ''यह एक नया मकान है।'' पुरानी कार में नई मोटर, नये टायर और नया रंग करने पर हम कह सकते हैं, ''यह एक नई कार है।'' घर तथा कार ''समय में नये'' नहीं हैं, परन्तु वे ''गुण में नये'' हैं। उन्हें नया जीवन दिया गया है। उन्हें फिर से बनाया गया है।

दूसरे शब्द, *केनोस* का इस्तेमाल पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 5:17 में किया है। वास्तव में, इस वाक्य का अनुवाद इस प्रकार किया जा सकता था, ''इसलिए यदि कोई मसीह में है, तो वह नये गुण वाला व्यक्ति है; पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, नये गुण वाली बातें आ गई हैं।'' पौलुस हमें यह नहीं कह रहा था कि हम समय में फिर से शुरुआत कर सकते हैं, बल्कि वह यह समझा रहा था कि हम नये गुण वाले लोग बन सकते हैं। अलिज़ाबेथ एकर्स एलन की तरह वह बीते समय को वापस लाने की हमारी इच्छा को स्वर नहीं दे रहा था:

लौट आ, लौट आ,
हे समय, वापस आकर,

केवल आज रात के लिए मुझे फिर से बच्चा बना दे!

बल्कि, पौलुस तो कह रहा था, ''तुम्हारा जीवन जैसा भी रहा हो, इसे नया बनाया जा सकता है। यदि तुम निराश हो, तो तुम विजयी बन सकते हो। यदि तुम आत्मिक रूप में मुर्दा हो तो तुम जीवित हो सकते हो।''

कलीसिया ऐसे लोगों का समूह है जिन्हें मसीह द्वारा नया बनाया गया है। ये वे लोग थे जो पहले पाप में मरे हुए थे परन्तु सुसमाचार के द्वारा इन्हें जिलाया गया है। कुलुस्से की कलीसिया से पौलुस ने कहा था, ''और उस ने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतना रहित दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया'' (कुलुस्सियों 2:13)। यद्यपि, मसीही लोगों को मसीह में नया जीवन दिया गया है, परन्तु उन्हें इस जीवन में परिश्रम करना पड़ेगा, ताकि पाप से उनका यह जीवन छिन न जाए। पौलुस ने इफिसुस के मसीहियों को समझाया, ''कि तुम अगले चालचलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार भ्रष्ट होता जाता है, उतार डालो। ... और नये मनुष्यत्व को पहिन लो, जो परमेश्वर के अनुसार सत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है'' (इफिसियों 4:22-24)।

नये गुण वाले इस जीवन के विषय में परमेश्वर एक उपयुक्त प्रश्न देता है: ''परमेश्वर यह गुण कैसे देता है?'' या, दूसरे ढंग से कहें, ''मसीह में हमें नई सृष्टि बनाने के लिए परमेश्वर क्या करता है?'' रोमियों 6 में पौलुस ने इस प्रश्न का उत्तर दिया है।

रोमियों 1-3 में, पौलुस ने समझाया कि लोग कैसे उद्धार पाते या आज्ञाकारी विश्वास द्वारा परमेश्वर के सामने धर्मी ठहरते हैं। रोमियों 4 में उसने परमेश्वर के सामने मनुष्य अर्थात इब्राहीम के धर्मी ठहरने का उदाहरण दिया है। फिर, रोमियों 5-8 अध्यायों में पौलुस ने उद्धार से मिलने वाली आशिषें गिनाई हैं: हमारा मेल परमेश्वर के साथ होता है (अध्याय 5); हमें क्षमा किया जाता है (अध्याय 6); हम आज्ञाकारी विश्वास के अधीन हैं, मूसा की व्यवस्था के अधीन नहीं (अध्याय 7); और हमें जीवन मिला है (अध्याय 8)।

रोमियों 6 अध्याय में, मसीह द्वारा पाप से स्वतन्त्रता की व्याख्या करके, पौलुस ने विस्तार से बताया कि परमेश्वर ने हमें कैसे नए लोग बनाया है। मेरे साथ रोमियों 6 अध्याय में आएं, और देखें कि कैसे परमेश्वर हमें मसीह में नए लोग बनाता है। पौलुस द्वारा प्रस्तुत प्रक्रिया को चरणों में बांटा जा सकता है। वैज्ञानिकों ने तितली के विकास के तीन भिन्न-भिन्न चरणों की खोज की है: अंडे का चरण, लारवा का चरण, और प्यूपा का चरण। उसी प्रकार, मसीह द्वारा नए लोग बनाने में हमारे भी तीन चरण देखे जा सकते हैं। इनमें से एक भी चरण के छूट जाने पर प्रक्रिया व्यर्थ हो जाएगी। आप मसीह में एक नए व्यक्ति बन सकते हैं; परन्तु पूरी तरह से नए होने के लिए आपको फिर से बनाने की परमेश्वर की बाकी प्रक्रिया में से होकर गुज़रना होगा।

परमेश्वर किसी को नया व्यक्ति कैसे बनाता है?

चरण एक: पृथकता

नये जीवन की यात्रा में पहला चरण पृथक होने का है। फिर से बनाने की परमेश्वर की प्रक्रिया के लिए पाप से पृथकता आवश्यक है।

पौलुस ने लिखा है, ''सो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो? कदापि नहीं, हम जब पाप के लिए मर गए तो फिर आगे को उस में क्योंकर जीवन बिताएं?'' (रोमियों 6:1, 2)। ''पाप के लिए मर गए'' शब्दों पर सावधानीपूर्वक ध्यान दें। इससे पिछले अध्याय, रोमियों 5 में पौलुस ने परमेश्वर के अनुग्रह पर ज़ोर दिया था। उसने स्पष्ट किया था कि जहां पाप अधिक होता है, वहां अनुग्रह उससे भी अधिक होता है (आयतें 20, 21)। उसने कहा था, ''परमेश्वर ने अपने अनुग्रह से हमारे पाप की समस्या पर काबू पा लिया, और इस प्रकार उसने समझाया है कि वह सचमुच कितना महान है।'' कोई सच्चाई को आसानी से गलत समझ सकता है। उदाहरण के लिए, कोई कह सकता है, ''शायद हमें पाप करते रहना चाहिए ताकि अनुग्रह बहुत हो। हमारी पाप की समस्या बड़ी होगी, तो परमेश्वर हमें बचाने के लिए अपना अनुग्रह दिखाएगा और इस अनुग्रह से वह समझाएगा कि वह फिर भी कितना महान है।'' पौलुस ने इस नासमझी का पहले से ही अनुमान लगा लिया था और रोमियों 6 के आरम्भ में इससे सम्बन्धित एक प्रश्न उठाया था: ''क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह बहुत हो?'' इस प्रश्न का उत्तर उसने यह दिया था कि, ''कदापि नहीं!'' फिर उसने पूछा था, ''हम जब पाप के लिए मर गए तो फिर आगे को उसमें क्योंकर जीवन बिताएं?'' दूसरे ढंग से कहें, तो हम कह सकते हैं: ''एक मसीही पाप में जीवन नहीं बिता सकता, क्योंकि वह तो पाप के लिए मर चुका है।''

पौलुस के अनुसार, पाप से हमारी मृत्यु को अन्तिम रूप तब तक नहीं मिलता, जब तक मसीह में बपतिस्मा नहीं हो जाता। रोमियों 6:4 में उसने कहा है कि हमने पाप के लिए अपनी ही आत्मिक मृत्यु में बपतिस्मा लिया है। परन्तु, पाप के लिए हमारी अपनी मृत्यु के बपतिस्मे के बाद विश्वास, मन फिराव तथा यीशु का अंगीकार करने के बाद पाप से अलग होना आवश्यक है। पौलुस ने इस आयत में पाप से पृथकता की बात नहीं की; बल्कि पाप के लिए हमारे मरने का हवाला देकर इसका अर्थ समझाया है। पाप से यह जुदाई जो कि पाप के लिए मृत्यु से प्रभावी होती है मसीह और परमेश्वर में विश्वास करने (प्रेरितों 15:9), मन फिराने (1 थिस्सलुनीकियों 1:9), और यीशु को मसीह और प्रभु मानने से होती है (रोमियों 10:10)।

सुसमाचार के कुछ आरम्भिक प्रचारकों ने मसीही बनने पर होने वाले चार महत्वपूर्ण परिवर्तनों की ओर ध्यान दिलाया था। पहला परिवर्तन *मन का बदलाव* अर्थात मन का शुद्धीकरण है। पतरस ने अन्यजातियों के लिए कहा था, ''और [परमेश्वर ने] विश्वास के द्वारा उन के मन शुद्ध करके हम में और उन में कुछ भेद न रखा'' (प्रेरितों 15:9)। दूसरा परिवर्तन *जीवन में आने वाला बदलाव,* अर्थात पाप करने से जीवन का प्रायश्चित है। मन फिराना एक ऐसा परिवर्तन है जिसके कारण जीवन में बदलाव तथा सुधार आता है (प्रेरितों 11:18)। तीसरा परिवर्तन *प्रतिष्ठा का बदलाव* अर्थात अपने विश्वास तथा निष्ठा की घोषणा

करना है। यह परिवर्तन यीशु को परमेश्वर का पुत्र और प्रभु मानने से होता है (रोमियों 10:10)। चौथा परिवर्तन *स्थिति का बदलाव* अर्थात मसीह में आना है। यह परिवर्तन बपतिस्मे के समय होता है (रोमियों 6:3)। इन चार परिवर्तनों में से तीन का संकेत पौलुस के वाक्य ''पाप के लिए मर गए'' में मिलता है, और चौथे का वर्णन विशेष रूप से रोमियों 6:4 में किया गया है। पौलुस के अनुसार, पाप के लिए पूर्ण मृत्यु तब तक नहीं होती जब तक ये चार परिवर्तन नहीं हो जाते।

हम सब ऐसे कई लोगों के बारे में जानते हैं जिन्होंने पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम में डुबकी का बपतिस्मा लिया है, परन्तु बपतिस्मा लेने के बाद उनका जीवन मसीह में नया नहीं हुआ। मसीह में बपतिस्मा लेने के बाद वे बिना बदले हुए अपने पिछले पापपूर्ण जीवन में लगे रहने अर्थात वही पुराने काम करते रहते हैं। उनके जीवनों को देखकर हम भी हैरान होते हैं कि वे नये जीवन में दाखिल क्यों नहीं हुए। रोमियों 6 अध्याय में पौलुस इस प्रश्न का कम से कम एक उत्तर अवश्य देता है। वह पूछता है, ''क्या उन्होंने अपने आप को पाप से अलग किया? क्या उन्होंने फिर से बनाने की परमेश्वर की प्रक्रिया को माना?'' किसी कारण, पृथकता के इस चरण की उपेक्षा करने से, मसीह में नये जन्म में प्रवेश नहीं किया जा सकता।

क्या *आप* ने सच्चे मन से मसीह में विश्वास लाकर, पाप से मन फिराने, और मसीह और प्रभु के रूप में यीशु का अंगीकार करके पृथकता के चरण को पार किया है?

चरण दो: उद्धार

फिर से बनाने की परमेश्वर की प्रक्रिया के दूसरे चरण को हम उद्धार का चरण नाम देंगे। वास्तव में इस चरण में हमें मसीह की आत्मिक देह में लाया जाता है। विलक्षण रूप से, यह चरण बपतिस्मे के आस पास घूमता है।

पौलुस ने रोमियों 6:3, 4 में लिखा है:

> क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।

नये नियम में हमें और कहां मिल सकता है जहां दो आयतें इतने कम स्थान में बपतिस्मे के विषय में बता सकती हैं? इन दो आयतों से बपतिस्मे के विषय में चार महत्वपूर्ण सच्चाइयां *समझाई* गई हैं।

पहली, पौलुस ने लिखा कि बपतिस्मा मसीह का [अर्थात मसीह में] है: ''क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का [में] बपतिस्मा लिया ...'' (आयत 3)। बपतिस्मा लेने पर, हमें परमेश्वर के अनुग्रह से मसीह की आत्मिक देह अर्थात कलीसिया

में लाया जाता है। मसीह की बात मानने के लिए बपतिस्मा हमारे विश्वास का अन्तिम भाग है (गलतियों 3:26, 27; 2 तीमुथियुस 2:10)।

दूसरी, पौलुस ने कहा कि हमें ''उस [मसीह की] मृत्यु का बपतिस्मा'' दिया जाता है (आयत 3)। नये नियम के बपतिस्मे में हमें मसीह की मृत्यु से मिलने वाले लाभों में भागीदार बनाया जाता है। यीशु की मृत्यु से जो भी लाभ होता है, वह हमें बपतिस्मे से ही मिलता है।

तीसरी, पौलुस ने पुष्टि की थी कि हम बपतिस्मे में गाड़े जाते हैं: ''सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए ...'' (आयत 4)। नये नियम का बपतिस्मा डूबोने से या गाड़े जाने से प्राप्त होता है। बहुत से अनुवादों में इस यूनानी शब्द *बेपटिज़ो* का अनुवाद नहीं बल्कि लिप्यान्तरण हुआ है। लिप्यान्तरण का अर्थ, अनुवाद करते समय यूनानी शब्द को स्थानीय भाषा में ज्यों का त्यों परिवर्तित कर देना है। अनुवाद में, उस भाषा के अर्थ वाला शब्द लगाया जाता है। यूनानी विद्वानों के अनुसार, *बेपटिज़ो* के हिन्दी अनुवाद के लिए मिलता-जुलता शब्द ''डुबकी'' है। पौलुस ने *बेपटिज़ो* की परिभाषा की इस आयत में (और कुलुस्सियों 2:12 में) प्रयुक्त शब्द से पुष्टि कर दी। हम आश्वस्त हो सकते हैं कि नये नियम का बपतिस्मा गाड़े जाना और डुबकी का बपतिस्मा ही है।

चौथी, पौलुस ने लिखा कि हम पाप के लिए अपनी आत्मिक मृत्यु का बपतिस्मा लेते हैं। उसने कहा, ''सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा से मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें'' (आयत 4)। पाप के लिए हमारी मृत्यु बपतिस्मे में पूर्ण होती है। विश्वास करने, मन फिराने, यीशु का अंगीकार करने और बपतिस्मे द्वारा, ''हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें। क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूटकर धर्मी ठहरा'' (रोमियों 6:6, 7)।

मसीह के जीवन की यादगार घटनाओं में से एक यूहन्ना द्वारा उसे बपतिस्मा देना था। पृथ्वी पर उसकी सेवकाई उसके बपतिस्मे तथा उसकी परीक्षाओं से पूर्ण होती है। यरदन नदी के किनारे प्रकट होने और यूहन्ना के पास बपतिस्मा लेने के लिए जाने पर यूहन्ना उसे बपतिस्मा देने से डरता था और उसने उससे कहा था, ''मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है?'' (मत्ती 3:14)। यीशु का उत्तर था, ''अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है'' (मत्ती 3:15)। यीशु द्वारा बपतिस्मा लेकर पानी से ऊपर आने के समय, दो महत्वपूर्ण घटनाएं घटी थीं। उसके पिता ने उन लोगों में पहली बार, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं'' के शब्दों के साथ उजागर किया था (मत्ती 3:17) और पवित्र आत्मा कबूतर के रूप में उस पर उतरा था (मत्ती 3:16)। यूहन्ना को पहचान दी गई थी कि जिस पर आत्मा उतरे और ठहरे वही परमेश्वर का पुत्र होगा (यूहन्ना 1:3)। यीशु के बपतिस्मे के बाद, यूहन्ना ने उसके परमेश्वर की ओर से होने की गवाही दी थी (यूहन्ना 1:29)। बपतिस्मे के बाद यीशु

ने अपनी सेवकाई को आरम्भ किया था।

यीशु के बपतिस्मे का महत्व हमें अपने बपतिस्मे के महत्व का स्मरण दिलाता है। विचार करें कि हमारा बपतिस्मा एक यादगारी है। पौलुस के अनुसार, हमारा बपतिस्मा या गाड़े जाना मसीह में और उसकी देह अर्थात कलीसिया में होता है। हमें उसकी मृत्यु में लाकर उसकी मृत्यु से मिलने वाले लाभ दिए जाते हैं। पाप के एक पुराने मनुष्य के अपने से जुदा होने के रूप में हम पाप से आत्मिक रूप से मरकर बपतिस्मा लेकर नये जीवन के लिए जी उठते हैं।

क्या *आप* परमेश्वर की फिर से बनाने की इस प्रक्रिया से गुज़र चुके हैं? क्या *आपने* मसीह का [में], अर्थात उसकी मृत्यु का [में] और पाप से अपनी आत्मिक मृत्यु का [में] बपतिस्मा ले लिया है?

चरण तीनः इससे-जुड़े रहें

फिर से बनाने की परमेश्वर की अद्‌भुत प्रक्रिया के तीसरे चरण को 'इससे-जुड़े रहें' का चरण कहा जा सकता है। एक बार जब हमें नये सिरे से बनाया जाता है, तो हमारे लिए नये बने रहना आवश्यक है। परमेश्वर हमें नया जीवन दे सकता है, परन्तु हमारे लिए आवश्यक है कि हम इसमें बने रहें। वह हमें सीधे और संकरे मार्ग पर ला तो सकता है, परन्तु चलना तो हमें ही है।

रोमियों 6 अध्याय की शेष आयतों में, पौलुस ने मसीह में मिलने वाले नये जीवन की कम से कम चार विशेषताएं बताई हैं। नये जीवन का प्रत्येक गुण प्रतिदिन के जीवन में होना आवश्यक है।

पहले, पौलुस ने कहा कि हमें मसीह में नई स्वतन्त्रता अर्थात पाप से छुटकारा मिला है। ''क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूटकर धर्मी ठहरा'' (रोमियों 6:7)। छुटकारा एक साधारण शब्द है और वास्तविक अर्थ देने से पहले इसे विशेष संदर्भ दिया जाना आवश्यक है। जब कोई कहता है, ''मैं छुटकारा पाना चाहता हूं,'' तो मैं उस से यह पूछना चाहता हूं कि, ''किस से छुटकारा पाना चाहते हो?'' केवल छुटकारा ही काफ़ी नहीं है। क्या वह काम से छुटकारा पाना चाहता है? नियमों से छुटकारा पाना चाहता है? नींद से छुटकारा पाना चाहता है? या किसी अन्य बात *से* छुटकारा पाना चाहता है? रोमियों 6 अध्याय में पौलुस ने ''छूटना,'' ''छुटकारा पाए हुए,'' और ''छुटकारा'' शब्दों को एक विशेष संदर्भ दे दिया। उसने कहा कि मसीह में हमें पाप से अर्थात इसके दोष से (रोमियों 3:24; 6:3); इसकी पकड़ से (रोमियों 6:17); और इसके दण्ड से छुटकारा मिलता है (रोमियों 6:21)।

दूसरा, पौलुस ने लिखा कि नये जीवन में नई संगति मिलती है अर्थात हमारी संगति परमेश्वर के साथ होती है। उसने कहा, ''ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिए तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में जीवित समझो'' (रोमियों 6:11)। इस आयत में दो भेद देखने को मिलते हैं; एक तो स्पष्ट है, और दूसरे के अर्थ को भी समझा जा सकता है। जिसे समझा जा सकता है वह यह सच्चाई है कि मसीही बनने से पूर्व, आप परमेश्वर की

ओर से तो मुर्दा पर पाप के लिए जीवित थे। स्पष्ट भेद से यह पता चलता है कि एक मसीही के रूप में आप परमेश्वर के लिए तो जीवित हैं परन्तु पाप के लिए मुर्दा। मसीह में, आपको एक नई संगति मिली है अर्थात परमेश्वर की नई संगति। प्रार्थना आप स्वर्गीय पिता के पास और प्रेमी उद्धारकर्त्ता के द्वारा कर सकते हैं। आप परमेश्वर के अस्तित्व, संगति, आशिषों, प्रतिज्ञाओं और उस आत्मिक जीवन के प्रति जो वह देता है, जीवित हैं।

तीसरा, पौलुस ने समझाया कि मसीह में नए जीवन का नए फल से पता चलता है।

> सो जिन बातों से अब तुम लज्जित होते हो, उनसे उस समय तुम क्या फल [अर्थात लाभ] पाते थे? क्योंकि उनका अन्त तो मृत्यु है परन्तु अब पाप से स्वतन्त्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल [लाभ] मिला जिस से पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है (रोमियों 6:21, 22)

गैर-मसीही व्यक्ति एक प्रकार का फल देता है, परन्तु वह फल चिरस्थाई या लाभदायक नहीं है, ''क्योंकि उनका अन्त तो मृत्यु है।'' मसीही व्यक्ति ऐसा फल लाता है जो जीवन का थोड़ा सा समय बीत जाने के बाद भी रहता है। उससे मसीही चरित्र का आत्मिक और अनन्त जीवन का ''सदा तक रहने वाला'' फल मिलता है। किसी ने कहा है, ''परमेश्वर को दिया जाने वाला दान ही हमारे पास रह जाता है।'' हम अपने जीवनों को मसीह के जीवन तथा काम में निवेश करते हैं, और वह उस निवेश से मसीही चरित्र तथा अनन्त जीवन का अविनाशी फल देता है।

चौथा, पौलुस ने कहा कि मसीह में नया जीवन एक नये भविष्य की उम्मीद है: ''क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है'' (रोमियों 6:23)। मसीही व्यक्ति स्वर्ग के मार्ग में है। उसने जीवन की पुस्तक अर्थात बाइबल का अन्तिम अध्याय पढ़ लिया है, और उसे पता है कि प्रभु के पास आने वाले लोग ही विजय पाएंगे। इस संसार में समय-समय पर लताड़े जाने व दुखी होकर उसे संघर्ष तो करना पड़ सकता है, परन्तु वह जानता है कि अन्त में विजय उसी की ही होगी!

मसीह में मिलने वाला नया जीवन शुद्ध मन वाले और भलाई का जीवन बिताने वाले हर व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करता है। मसीही बनने पर हमें एक नया जीवन मिलता है जो कि पाप से छुटकारा, उसके साथ संगति का, फलदायक और स्वर्ग में भविष्य की आशा वाला जीवन है।

इस नये जीवन को संभाले रखना आवश्यक है। मान लीजिए, आपको एक नई कार दे दी जाती है कि आप उसे चलाएं, और मज़ा करें। यदि आप कुछ देर के लिए उससे आनन्द पाना चाहते हैं तो ज़रूरी है कि आप उसकी संभाल भी करें। यदि आप उसे सावधानी से नहीं चलाते, उसके इंजन का ध्यान नहीं रखते, उसके टायरों में हवा नहीं भरवाते, और उसमें पेट्रोल नहीं डालते, तो आप उस कार का अधिक देर तक आनन्द नहीं ले सकते।

एक मसीही व्यक्ति के लिए ज़रूरी है कि वह पाप से अपने छुटकारे की अपनी

स्वतन्त्रता की चौकसी रखे। उसे चाहिए कि वह अपना मन शुद्ध रखे और बुराई को फिर से अपने जीवन पर नियन्त्रण पाने के लिए आने की अनुमति न दे। उसे प्रार्थना, बाइबल अध्ययन, अन्य मसीही लोगों के साथ संगति और परमेश्वर के साथ हर रोज चलकर परमेश्वर से संगति को दृढ़ करते रहना चाहिए। बढ़ने की इच्छा रखकर, दूसरों को मसीह में लाने की तलाश में उसे अपने आप में और दूसरों में चरित्र का निर्माण करके फल देते रहना चाहिए। उसे चाहिए कि मन में इस आशा को जीवित रखकर अनन्त जीवन की आशा में दृढ़ रहे।

सारांश

आप आज मसीह में नये मनुष्य बन सकते हैं। परमेश्वर आपसे अपने वचन द्वारा नया बनाने की अपनी प्रक्रिया को मानने के लिए कहता है ताकि वह आपको मसीह में नया जीवन दे सके। इस प्रक्रिया में पृथकता, उद्धार, और इससे जुड़े रहना शामिल है। प्रत्येक चरण महत्वपूर्ण और आवश्यक है।

विचार करें कि मसीह में इस नये जीवन को पाना कैसा लगेगा! घर से दो दिन बाहर रहने के बाद, कल्पना कीजिए कि लौटने पर आपको अपने घर की प्रत्येक वस्तु बिल्कुल नई मिले, आपके घर से बाहर रहते समय किसी ने आपके घर में आकर सब कुछ नया कर दिया हो तो आपको कैसा लगेगा। आप क्या करेंगे? शायद आप घर में कभी इधर कभी उधर भाग-भाग कर हर चीज को छू-छूकर देखेंगे। आप नई कुर्सियों को, नये मेज़ों को, नये बिस्तरों को, नये तौलियों को, नये कपड़ों को, नये जूतों को, नये सामान को, नये गलीचों, कालीन और दूसरी बहुत सी चीजों को छू-छू कर देखेंगे। क्या आप अपने नये सामान से रोमांचित नहीं होंगे। निश्चय ही आप आनन्द और उत्तेजना से भर जाएंगे!

अधिक सम्भावना तो यही है कि आपके या मेरे साथ ऐसा कभी नहीं होगा? बहुत ही कम सम्भावना है कि आप कभी घर जाएं और पाएं कि किसी ने आपके घर में नया फर्नीचर और कपड़े रख दिए हों। पर कुछ और भी हो सकता है और वह इस सारे नये सामान से कहीं अधिक अच्छा है और वह यह है कि आप नये व्यक्ति बन सकते हैं। आपको आज ही परमेश्वर की ईश्वरीय प्रक्रिया से नये सिरे से बनाया जा सकता है।

कलीसिया ऐसे ही लोगों से बनती है जिन्होंने परमेश्वर के नये जीवन को पा लिया हो। वे सब नया जीवन धारण किए परिवार के सदस्य हैं। साथ ही यह कि परमेश्वर आपको एक नया मनुष्य बनाता है, वह आपको अपनी कलीसिया में लाता है। आप परमेश्वर की नये बनाने की प्रक्रिया को मानकर नये जीवन की संगति में प्रवेश क्यों नहीं कर लेते?

अध्ययन एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. यूनानी शब्दों *नियोस* और *केनोस* में क्या अन्तर है ? 2 कुरिन्थियों 5:17 में इस अन्तर की प्रासंगिकता बताएं ?
2. मसीही बनने से पहले मरे हुए होने का क्या अर्थ है ?
3. रोमियों 1-8 की संक्षिप्त रूपरेखा बताएं।
4. बताएं कि पौलुस के प्रश्न ''क्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो ?'' (रोमियों 6:1) का क्या अर्थ है।
5. पाप से हमारी मृत्यु कब और किस समय पूर्ण होती है ?
6. मन परिवर्तन की प्रक्रिया में पाप से पृथकता कैसे होती है ?
7. पृथकता के चरण को निकाल दिया जाए तो मन परिवर्तन में कितनी सच्चाई होगी।
8. हमें मसीह में कैसे लाया जाता है ?
9. यूनानी शब्द *बैपटिज़ो* का क्या अर्थ है
10. रोमियों 6:4 में पौलुस का यह कहने का क्या अभिप्राय था कि हमने मृत्यु का बपतिस्मा लिया है ?
11. रोमियों 6:1-4 में पौलुस द्वारा बताई बपतिस्मे की चार विशेष बातें लिखें।
12. रोमियों 6:7 के अनुसार, हमें मसीह में किस प्रकार का छुटकारा मिलता है ?
13. ''परमेश्वर के लिए जीवित'' होने की बात कहने का पौलुस का क्या अर्थ था ?
14. एक मसीही व्यक्ति कैसा फल लाता है ?
15. मसीही व्यक्ति का भविष्य क्या है ? वर्णन करें।